काव्य हेतु

शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात् ।

काव्यज्ञशिक्षयाभ्यास इति हेतुस्तदुद्भवे ॥

(काव्यप्रकाश कारिका 3)

अनुवाद- शक्ति, लोक-शास्त्र-काव्य आदि के अध्ययन से प्राप्त निपुणता तथा काव्यज्ञ से प्राप्त शिक्षा काव्य की उत्पत्ति के कारण हैं।

शक्ति- शक्तिः कवित्वबीजरूप संस्कार विशेषः यां विना काव्यं न प्रसरेत्, प्रसृतं वा उपहसनीयं स्यात् । अर्थात् शक्ति कवित्वबीजरूप संस्कार विशेष है, जिसके बिना काव्य की रचना नहीं हो सकती और यदि हो भी जाए तो वह उपहसनीय होती है।

लोक- लोकस्य स्थावरजङ्गमात्मकस्य लोकवृतस्य । अर्थात् स्थावर और जङ्गम रूप संसार का व्यवहार।

शास्त्र– शास्त्राणां छन्दोव्याकरणाभिधानकोशकला चतुर्वर्गगजतुरगखड्गादि लक्षणग्रन्थानां काव्यानां च महाकविसम्बन्धिनाम् । अर्थात् छन्द, व्याकरण, शब्दकोश, कला, चतुर्वर्ग(धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष), हाथी, घोड़े एवं खड्ग आदि के लक्षण ग्रन्थ। काव्यानां का अर्थ है महाकवियों से सम्बन्धित काव्य।

इन सभी का गहन अध्ययन कर ज्ञान अर्जित करना निपुणता है। काव्य की रचना करना तथा उसके गुण-दोष का विचार करने वाले जो लोग हैं उनके उपदेश से काव्य की रचना तथा पुनर्संयोजित करने का बार-बार अभ्यास करना । इस प्रकार ये तीनों(शक्ति/प्रतिभा, निपुणता और अभ्यास) अलग-अलग नहीं, अपितु सम्मिलित रूप से काव्य के निर्माण तथा विकास में कारण हैं।

आचार्य मम्मट ने काव्य-कारण के रूप में तीन तत्त्वों को स्वीकार किया है- प्रतिभा, सांसारिक विषय, विविध शास्त्र तथा काव्य आदि के अध्ययन से प्राप्त ज्ञान तथा काव्य के

तत्त्वों के जानने वाले काव्यज्ञ पुरुषों के सान्निध्य में बारम्बार अभ्यास । इन तीनों के साथ मिलने पर ही काव्य रचना हो पाती है ।